



चरागाह के शत्रु पौधे

पवन कुमार माहौर*, तरुण कुमार जैन* और अरुण कुमार तोमर*

॥ बीसवीं सदी के बाद चरागाह के लिए आरक्षित स्थानों पर मानव द्वारा निरंतर अतिक्रमण से इसका क्षेत्रफल कम होता जा रहा है। इसके साथ ही चरागाह के लिए दूसरा महत्वपूर्ण क्षति पहुंचाने वाला कारक आयातित कृषि उत्पादों के साथ आये हुए हानिकारक पौधों के बीज इत्यादि अंश हैं। ये पौधे भारत में पहले नहीं पाए जाते थे। इन हानिकारक पौधों का तीव्र गति से प्रसार हो रहा है तथा ये हमारे चरागाह को क्षति पहुंचा रहे हैं। ॥

चरागाह को क्षति पहुंचाने वाले अधिकतर पौधों के उत्पत्ति स्थल देश के बाहर स्थित हैं। इन पौधों के देश में आगमन के बाद ही चरागाह को जैविक रूप से क्षति पहुंचनी प्रारम्भ हुई है। इन विदेशी पौधों के लिए यहां अनुकूल परिस्थितियां विद्यमान हैं। इनमें देसी पौधों को दबाने का गुण भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इन पौधों में प्रमुख हैं-विलायती बबूल, लैंटाना या जरायन, गाजरघास इत्यादि। इनका विस्तृत वर्णन व प्रबंधन आगे दिया गया है।

विलायती बबूल

वानस्पतिक नाम *प्रोसोपीस् जूलीफ्लोरा* है तथा यह फैबेसी परिवार का सदस्य है। यह झाड़ीदार छोटे आकार का वृक्ष होता है। इसे अंग्रेजी में बबूल तथा काबुली कीकर भी कहते हैं। इसके उत्पत्ति स्थल मैक्सिको, दक्षिण अमेरिका और कैरिबियन द्वीप हैं। इसे आमतौर पर मेस्काइट के रूप में जाना जाता है तथा दुनिया के कई क्षेत्रों में इसके आक्रामक रूप से बढ़ने की सूचनाएं प्राप्त होती रहती हैं। यह एशिया, ऑस्ट्रेलिया एवं अन्य स्थानों पर एक अवांछित वृक्ष के रूप में

*भाकृअनुप-केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

पाया जाने लगा है। वृक्ष सामान्यतः 2 मीटर से 8 मीटर लम्बा होता है। इसके तने का व्यास 5 सें.मी. से 30 सें.मी. तक होता है। इसकी जड़ें भूमि में गहराई तक पहुंचती हैं।

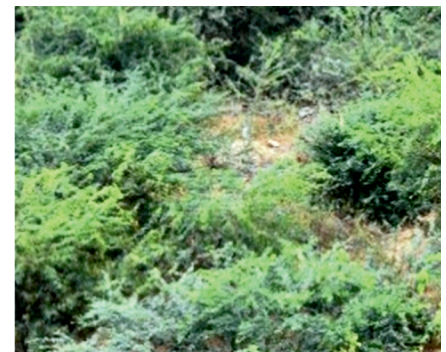
हानि

पर्यावरण को दूषित करने के साथ-साथ कांटेदार अंग्रेजी बबूल से जीव-जंतु व पक्षी भी घायल हो जाते हैं। कीकर के नीचे कोई पेड़ होना तो अलग बात है, इसके नीचे घास भी नहीं उग पाती है। इससे पर्यावरण को भी नुकसान होता है। इसका कांटा सबसे नुकीला होता है। कुछ समय पूर्व तक पशुओं को पहाड़ी क्षेत्र में चरने के लिए छोड़ देते थे, तब लोगों के पशु उन क्षेत्रों में घास चरकर अपना पेट भर लेते थे, लेकिन जब से विलायती बबूल की झाड़ियों का आक्रमण पहाड़ों पर हुआ है, तब से घास भी नष्ट हो गई है। इन झाड़ियों के नीचे दूसरे छोटे-छोटे चराई योग्य पौधे भी खत्म हो जाते हैं। इनसे पहाड़ों में रहने वाले तेंदुए के शावक तक घायल हो जाते हैं। नीलगाय भी इन अंग्रेजी बबूल के झुंड में से निकलती हैं, तो उनके शरीर को भी ये नुकीले कांटे चीर देते हैं।

विलायती बबूल

इसके बीज को हवाई जहाज से सम्पूर्ण भारत में नहरों के किनारे व ऊसर, बंजर भूमि पर बिखेरा गया था। यह एक सदाबहार पेड़ है। मेस्काइट एक नाइट्रोजन-फिक्सर प्रजाति है। यह कम वर्षा और उच्च तापमान वाले क्षेत्रों में पनपता है। यह सघन मृदा या हार्ड पैन वाली मृदा पर उगता है। खारी मृदा को सहन करता है और कुशलता से मृदा का पानी अवशोषित करता है। कृषि, मनोरंजन, वैश्विक व्यापार और परिवहन जैसी कई मानवीय गतिविधियों ने इस प्रजाति के प्रसार को बढ़ावा दिया है। इस पौधे के लिए प्राकृतिक फैलाव की बाधाएं न होने के कारण यह नई रेंज में स्थापित होकर फैल गया है। इस कारण कृषि परिदृश्य और बागवानी क्षेत्र के लिए आर्थिक खतरे उत्पन्न हो रहे हैं। जैविक आक्रमण को पारिस्थितिक तंत्र के क्षरण के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक माना जाता है। दुनियाभर में सामुदायिक संरचना, स्थानीय प्रजातियों और जैव विविधता की हानि के दुष्प्रभाव अब जनजीवन में साफ दिखाई दे रहे हैं। इसकी झाड़ियां प्रत्येक जगह फैल गई हैं और लाभदायी पौधे नष्ट हो गए हैं।

यह वृक्ष सबसे ज्यादा कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ता है। भूजल के लिए भी यह खतरनाक है। जहां पर अंग्रेजी बबूल होगा, वहां का जलस्तर भूतल में काफी नीचे चला जाता है। इसकी जड़ें जमीन में कई मीटर नीचे तक जाती हैं और भूजल सोख लेती हैं। ऐसे में जहां भी ये पेड़ बहुतायत संख्या में हों, वहां लोगों को पानी की समस्या से जूझना पड़ता है। यह एक ऐसा पौधा है, जिसे विशेषज्ञ रक्तबीज की संज्ञा भी देते हैं। कहीं इसका एक पौधा लगा दिया जाए, तो कुछ वर्षों में ही वहां सैकड़ों कीकर के पेड़ तैयार हो जाते हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि कीकर एक ऐसा पौधा है, जो अपने आसपास अन्य पौधों को पनपने ही नहीं देता है। इसकी वजह



चरागाह को समूल नाश करता विलायती कीकर

से तमाम देसी और औषधीय गुणों वाले पौधों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।

गाजरघास

पार्थेनियम को देश के विभिन्न भागों में कई नामों से जाना जाता है—जैसे कांग्रेस घास, सफेद टोपी, चटक चांदनी, गंधी बूटी आदि। देश में वर्ष 1955 में दृष्टिगोचर होने के बाद यह विदेशी खरपतवार यहां के विभिन्न क्षेत्रों में फैल गई है। यह मुख्यतः खाली स्थानों, अनुपयोगी मृदा, औद्योगिक क्षेत्रों, बगीचों, पार्कों,



हानिकारक गाजरघास

स्कूलों, रहवासी क्षेत्रों, सड़कों तथा रेलवे लाइन के किनारों आदि पर बहुतायत में पाई जाती है। विशेष रूप से यह चरागाहों की भूमि तथा सभी प्रकार की खाद्यान्न फसलों, सब्जियों एवं उद्यानों में भी बढ़ती जा रही है। पानी मिलने पर यह वर्षभर फल-फूल सकती है, लेकिन वर्षा ऋतु में इसका अधिक अंकुरण होने पर यह एक भीषण खरपतवार का रूप ले लेती है। इसका पौधा 3-4 महीने में अपना जीवनचक्र पूरा कर लेता है तथा एक वर्ष में इसकी 3-4 पीढ़ियां पूरी हो जाती हैं।

हानि

गाजरघास से मानव में त्वचा संबंधी डरमेटाइटिस, एग्जीमा, एलर्जी, बुखार, दमा आदि जैसे रोग हो जाते हैं। इसका अत्यधिक प्रभाव होने पर मनुष्य की मृत्यु तक हो सकती है। पशुओं के लिए भी यह खरपतवार विषाक्त होती है। इसके तेजी से फैलने के कारण अन्य उपयोगी वनस्पतियां खत्म होने लगती हैं। जैव विविधता के लिए यह एक बहुत बड़ा खतरा बनती जा रही है। इसके कारण फसलों की उत्पादकता बहुत कम हो जाती है।



चरागाह को लीलता गाजरघास

उपाय

गाजरघास को फूल आने से पहले जड़ से उखाड़कर कम्पोस्ट एवं वर्मीकम्पोस्ट बनाना चाहिए। अकृषित क्षेत्रों में शाकनाशी रसायन जैसे ग्लायफोसेट 1.0-1.5 प्रतिशत या मेट्रीब्यूजिन 0.3-0.5 प्रतिशत घोल का फूल आने के पहले छिड़काव करने से यह नष्ट हो जाती है। ग्रीष्म एवं शरद ऋतु में अकृषित क्षेत्रों में अंकुरित होने पर कुछ बढ़वार करने के बाद पानी न मिलने के कारण इनका विकास नहीं हो पाता है। वर्षा होने पर यही पौधे शीघ्र बढ़कर बीजों का उत्पादन करते हैं। अतः ऐसे समय में इन्हें शाकनाशियों द्वारा नष्ट करना चाहिए। फसलों में गाजरघास को रासायनिक विधि द्वारा नियंत्रित करने के लिए खरपतवार वैज्ञानिक की सलाह अवश्य लें। मैक्सिकन बीटल (*जाइग्रोग्रामा बाइकोलोराटा*) नामक कीट को वर्षा ऋतु में गाजरघास पर छोड़ना चाहिए। समय-समय पर लोगों को इसके दुष्प्रभाव एवं नियंत्रण के बारे में जानकारी देकर जागरूक करें।

लैंटाना

यह एक सुंदर फूलों वाला जहरीला पौधा है। यह शाकाहारी वन्य प्राणी तथा पालतू पशुओं के लिए जानलेवा होता है। इसके सेवन से पशुओं की मृत्यु की खबरें आती रहती हैं। भारतीय जंगलों और चरागाहों को इस फूल के पौधे से गंभीर खतरा है। इस बेहद खतरनाक पौधे का वैज्ञानिक नाम *लैंटाना कैमरा* और आम बोलचाल की भाषा में पंचफूली भी कहा जाता है। इसकी फैमिली *वेरबेनेसी* है। लैंटाना कैमरा को 200 वर्ष पहले अंग्रेज सजावटी फूल के रूप में लाए थे। फूल आज भारत के वनों के लिए अभिशाप बन गए हैं। सुंदर दिखने वाले ये फूल असल में बेहद ही खतरनाक होते हैं। इसके वृक्ष में मई-जून में पुष्प आते हैं और इसे बीज बनने के पहले नष्ट कर सकते हैं।

हानि का कहर

जानकारी के अनुसार लगभग तीन बार आसपास के पौधे बढ़ने का प्रयास करते हैं। इसके बाद लैंटाना के प्रभाव से वे पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं और वह क्षेत्र उजाड़ में तब्दील हो जाता है। इस पौधे की पत्तियों से *अलीलो कैमिक्स* नाम का जहरीला पदार्थ निकलता है, जो उपजाऊ जमीन को बंजर कर देता है। यह पदार्थ इतना जहरीला होता है कि अपने आसपास उगने वाली घास को भी सड़ाकर नष्ट करने की क्षमता रखता है। वहीं इसके पत्ते काटेदार होते हैं और इस कारण इन्हें मवेशी भी नहीं खाते हैं।



चारा वाली घासों को कुचलता लैंटाना

हानि

लैंटाना कैमरा के पौधे जहां पर भी उगते हैं, वहां की जमीन को बंजर बना देते हैं। इससे भी बड़ी मुश्किल यह है कि इस पौधे के आसपास कोई पेड़-पौधा यहां तक कि अन्य खरपतवार तक पनप नहीं सकता। जहरीला होने के कारण इसे हाथी, हिरण जैसे शाकाहारी प्राणी खा नहीं सकते। अगर किसी वन्यप्राणी ने इसे खा लिया, तो उसकी मौत भी हो सकती है। यह पौधा जंगलों के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इसके अतिरिक्त सीधे तौर पर लीवर टॉक्सिन के साथ एलर्जी वाले तत्व इसमें पाये जाते हैं। लीवर की समस्या के साथ ही सबसे अधिक प्रभाव लैंटाना से त्वचा रोग में देखने को मिले हैं। इसकी जड़ों से एक एलोपैथिक रसायन का स्रवण होता है, जिससे उसके आसपास कोई अन्य पौधा नहीं उग पाता है। यह अन्य पौधों के बीजों का अंकुरण नहीं होने देता है। अंकुरण रोकने के साथ ही अन्य छोटे पौधों की वृद्धि को रोकता है। इसके प्रभाव से पौधों एवं बीजों की मृत्युदर बढ़ जाती है। जंगलों सहित अन्य वनस्पतियों का नष्ट होना निरंतर प्रक्रिया में शामिल हो जाता है। जिस स्थान पर इसकी बहुलता होती है, वहां जमीन पर छांव नहीं होती है। मृदा की उर्वराशक्ति पर इसका प्रभाव इस रूप में मिलता है कि वहां छांव नहीं होने के कारण पौधों की वृद्धि के लिए प्राकृतिक रूप से प्राप्त पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं। लैंटाना विश्व के सौ खतरनाक और वनस्पति जगत को क्षति पहुंचाने वाले पौधों में शामिल है। जानकारी के अभाव में जाने-अनजाने जंगलों को बर्बाद करने वाले इन पौधों को आम लोगों के द्वारा भी संरक्षण दिया जा रहा है। इस पर ध्यान नहीं दिया गया, तो जंगलों पर इनका व्यापक दुष्प्रभाव पड़ेगा और जंगल नष्ट हो जाएंगे। जिस क्षेत्र में इस पौधे की भरमार होती है, उस क्षेत्र के सारे जंगल नष्ट हो जाते हैं। अन्य पौधों का अस्तित्व ही पूर्ण रूप से मिट जाता है। यह क्षेत्र की उर्वरा क्षमता को भी प्रभावित करने लगता है।